पद १३०

(राग: कालंगडा - ताल: धुमाली)

कोण विपरीत प्रसंग ओढवला। सार्वभौम आला भिक्षा मागे।।१॥ पूर्ण परब्रह्म मागे विषय भिक्षा। जन्ममरण शिक्षा अज्ञान संगे।।२॥ स्विप्तं गेल्या जीवा सती गेली विधवा। मूर्ख संशय भावा सोडवी देवा।।३॥ आत्मा अविनाशी विषय प्रकाशी। इद्रिय भोग ग्रासी जागृति स्वप्नीं।।४॥ विषय भोग नाना चिदात्मा मळेना। जन्मेना नासेना मानस धर्मे।।५॥ जड ना संसारीं आत्मा निर्विकारी। भोग भ्रांति वारि गुरु बोध वचने।।६॥ ईश जीव मी मी विषय भोगी मी मी। मजमाजीं मी मी स्फुरतो आत्मा।।७॥ सकलमती भेटे अस्ति नास्ति प्रगटे। लोटितां न लोटे ज्ञानमार्ताण्ड हा।।८॥